रेशमा भारती

जंगल के मित्र

झाड़ियों में सरसराहट हुई तो वेंकट और विवेक एक बड़े से पेड़ के पीछे छिप गए। थोड़ी ही देर में उन्होंने वेंकट के पिता को झाड़ियों से निकलकर घने जंगल की ओर जाते देखा। उनके साथ दो और लोग भी थे। उनके हाथों में खाली बर्तन, टोकरी और रस्सी थी। वेंकट जानता था कि अब वे दोपहर बाद तक ही लौटेंगे। उसने विवेक को बताया कि वे जंगल में शहद, सुगन्धित धूप (जिसे आमतौर पर पूजा में इस्तेमाल करते हैं) और गार्सिनिया के बीज जमा करेंगे (जिनसे वे मक्खन या घी बनाते हैं)। आते समय कुछ नारियल और सम्भव हुआ तो कुछ बेंत (केन) भी लेते आएँगे – जिनसे माँ सुन्दर टोकरियाँ बनाती हैं। वैसी ही एक टोकरी वेंकट ने विवेक के जन्मदिन पर उसे दी थी। विवेक ने "धूप" को जंगल में नहीं देखा था। उसकी उत्सुक निगाहों को देखते हुए वेंकट ने बताया कि एक खास किस्म के पेड़ के तने को खुरचने पर एक पीला, भूरा-सा चिपचिपा पदार्थ निकलता है। उसी को सुखाकर धूप तैयार की जाती है। यही तो बाजार में पूजा सामग्री के रूप में भी बिकती है और मच्छर-मक्खी भगाने के काम भी आती है।

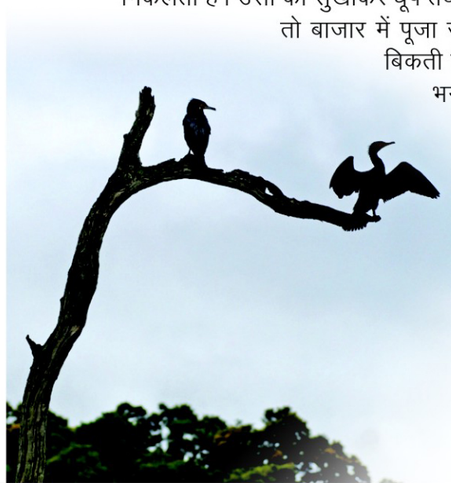

बातें करते हुए दोनों दोस्त जंगल में ही टहलने लगे। वे बैंगलोर से तीन सौ मील दूर थे। पश्चिमी घाट की पहाड़ियों के सदाबहार वनों में। नारियल के पेड़ों को पार करती हुई सूरज की किरणें उनको नहला रही थीं। हल्की ठण्ड की सुबह में धूप शरीर को आराम दे रही थी। आज छुट्टी का दिन था। दोनों मस्त थे। जंगल उनके मिलने का स्थान था। यहीं पर तो वे दोस्त बने थे – जब वेंकट ने विवेक को जंगली भैंसे से बचाया था। वे हर छुट्टी में छिप-छिपकर मिला करते थे और फिर इसी जंगल में आ जाते थे। फिर क्या दोपहर तक खूब मस्ती रहती!

वेंकट गज़ब का साहसी था। जंगली जानवरों से भी नहीं डरता था। वैसे तो दोनों सड़क के पास वाले जंगल के हिस्से में ही खेला करते थे; पर फिर भी विवेक अगर अकेला होता तो उसे बहुत डर लगता था। पर वेंकट के होते तो चाहे बन्दर आ जाएँ, चाहे भैंसा – कोई डर नहीं! वेंकट अपने पिता से नारियल के पेड़ पर चढ़ना भी सीख चुका था। जब भी प्यास लगती वह नारियल तोड़ लाता और दोनों नारियल पानी और मीठी गिरी का मज़ा लेते थे। वेंकट के पास हमेशा एक तेज़ कटार रहती थी जिससे वह नारियल छीला करता था।

वेंकट का घर जंगल से बिल्कुल सटा हुआ था पर दूसरी ओर, वहाँ जहाँ बेदथी नदी बहती है। और स्कूल घर से कई मील दूर था। वे लोग नीग्रो थे और जीसस को मानते थे। वेंकट की माँ तरह-तरह की सुन्दर टोकरियाँ बनाती थीं। वेंकट जंगल से तरह-तरह के पत्ते तोड़कर ले जाता था। पत्तों से वे साग और चटनी बनाते थे। विवेक ने वेंकट के घर कई बार केले की स्वादिष्ट मिठाई खाई थी।

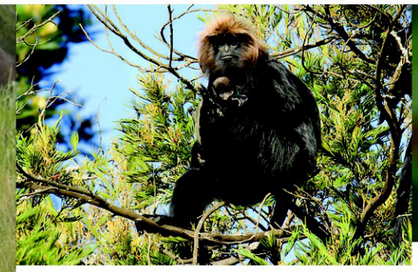

विवेक जंगल के पास के एक छोटे कस्बे में रहता था। उसके पिता के बागान और खेत जंगल से सटे हुए थे। कभी-कभी सर्दियों में वेंकट के पिता विवेक के पिता के बागान पर काम करने आते थे। विवेक स्कूल की छुट्टी के दिन बागान में ही गज़ारता था। विवेक को अपने बागान बहुत अच्छे लगते थे। वहाँ सुपारी और नारियल के पेड़ थे। इलायची और काली मिर्च भी वहाँ उगाई जाती थी। और थे खुशबूदार वनीला के पौधे। हाँ, वही वनीला जो आइसक्रीम में डलती है।

विवेक को पेड़ के नीचे तने से लिपटी लताओं में उगी इलायची देखना अच्छा लगता था। अँगूर के गुच्छों जैसे काली मिर्च के हरे गुच्छे भी सुन्दर लगते थे। बागान में बने घर में महिलाएँ सुपारी को इतनी तेज़ी से छीलकर निकालतीं कि वेंकट हैरान रह जाता। अन्दर से भूरे रंग की सुपारी निकलती थी। कुछ सुपारी खौलते पानी में डालकर भी सुखाई जाती थीं। बाकी को यूँ ही सीधे धूप में सुखा दिया जाता।

पर बागान से ज़्यादा मज़ा जंगल में आता था और मौका पाते ही विवेक जंगल में भाग जाता था। जंगल में खुलापन था, मस्ती थी, रोक-टोक नहीं थी और कदम-कदम पर नए-नए अजूबे दिखाई देते। मोटी-मोटी बेलें पेड़ों पर लिपटी रहती थीं। कुछ तो इतनी लम्बी थीं कि कई पेड़ों पर एक साथ चढ़ जाती थीं और फिर झूलती हुई हवा में लटक जातीं। गर्मियों में बन्दरों की कोई टोली बाहर निकल आती तो छिपकर उन्हें आम खाते हुए देखने में बड़ा मज़ा आता था। कुछ ही देर में वे पूरे पेड़ के आम साफ कर डालते। विवेक अपनी दोनों जेबों में भरकर केले और कटहल के चिप्स ले आता था। दोनों को ये बड़े अच्छे लगते। वेंकट उसे बहुत लम्बी छिपकली और साँप के बिल दिखाया करता। दोनों को इल्लियों के घर देखकर आश्चर्य होता था। इल्लियाँ मिट्टी के बड़े-बड़े टीलेनुमा घर बनाती थीं। आमतौर पर ये किसी मोटे तने वाले पेड़ के इर्द-गिर्द रहते थे।

वेंकट और विवेक पूरे हफ्ते छुट्टी का इन्तज़ार करते थे, जब वे जंगल में मज़े कर सकते थे। बस बड़ों की निगाहों से बचकर रहना पड़ता था। विवेक के पिता ऊँचे परिवार के थे और इसलिए वे नीग्रो लोगों से सम्बन्ध नहीं रखते थे। पर विवेक वेंकट से बहुत प्यार करता था। उसे नीग्रो लोगों के जीवन में भी रुचि थी। उसे जंगल प्यारा लगता था और जंगल के बीच रहने वाले लोग भी। इसलिए दोनों छिपकर मिलते थे। विवेक वेंकट को अपने शहर के स्कूल के बारे में किस्से सुनाता और कहानी की किताबें लाकर देता था।

विवेक और वेंकट दोनों को ही समुद्र बहुत अच्छा लगता था। जब उसके पिता अपने दोस्तों के साथ टोकरियाँ और धूप आदि बेचने शहर की ओर जाते तब वेंकट समुद्र तट पर जाता था। कभी-कभी वे उसे भी ले जाते थे। वापसी में कुछ देर समुद्र तट पर नारियल पानी बेचकर वे घर आ जाते। विवेक क्रिसमस या दिवाली की छुट्टियों में अपने परिवार के साथ समुद्र किनारे जाया करता था। वे वहाँ पिकनिक मनाते थे। रेत के टीले और घर बनाते थे, सीपियाँ चुना करते थे। वेंकट और विवेक दोनों को समुद्र में तैरना बहुत पसन्द था। समुद्र जितना गहरा था; उतनी ही गहरी उनकी दोस्ती भी तो थी!

सभी फोटो: साभार इंटरनेट